तीन मूर्ति पूजा

ऋषभदेव, चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य भगवान

(धर्मपुरा-गांधीनगर, दिल्ली में विराजमान)

संकलनकर्त्री-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

संसार में दो प्रकार के मार्ग बताए गये हैं-

१. भक्तिमार्ग और २. निवृत्तिमार्ग

इनमें से प्रथम भक्तिमार्ग पर चलकर ही क्रम से निवृत्तिमार्ग सुलभ हो सकता है। श्रावक जन देव-शास्त्र-गुरू की भक्ति करके अपने कर्मों की निर्जरा के साथ ही साथ इस भव और परभव में सुखी रह सकते हैं। कहा भी है-

एकापि समर्थेयं, जिनभक्तिर्दुगर्त्तिनिवारयितुम् ।
पुण्यानि च पूरयितुं, दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।

अर्थात् जिनेन्द्रभक्ति संसार में एक अमोघ शक्ति मानी गई है जो कि दुर्गति के निवारण में समर्थ है, पुण्य का बंध कराने वाली है एवं मुक्तिलक्ष्मी को प्राप्त कराने वाली है।

धर्मपुरा गांधीनगर दिल्ली की जैन समाज विशेष धर्मनिष्ठ समाज है, वहाँ के निवासी श्रावक श्री आनंद प्रकाश जैन ने मंदिर में तीन जिनप्रतिमाएं विराजमान करने के पश्चात् उनकी पूजा की पुस्तक प्रकाशित करने की भावना हुई, जो कि सराहनीय है।

तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग-दिगम्बर जैन तीर्थ पर प्रथम चातुर्मास के अंतर्गत पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ६९वें जन्मदिवस के शुभअवसर पर प्रकाशित यह पुस्तक सभी के ज्ञान की एवं भक्ति में वृद्धि करे साथ ही सभी पाठकगणों के हृदय में भी ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करे, यही मंगल कामना है।

प्रस्तावना

ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

वसुनन्दि श्रावकाचार में कहा है-

जो मनुष्य धनिया के पत्र बराबर जिनभवन बनवाकर उसमें सरसों के बराबर भी जिनप्रतिमा की स्थापना करता है, वह तीर्थंकर पद पाने के योग्य पुण्य को प्राप्त करता है, तब जो कई अति उन्नत जिनेन्द्रभवन बनवाता है उसका समस्तफल वर्णन करने के लिए कौन समर्थ हो सकता है?

वास्तव में जिनप्रतिमा निर्माण की महिमा अचिन्त्य है।

यह तो सभी जानते हैं कि भगवान की पूजा आठ प्रकार के द्रव्यों से की जाती है। इन आठ द्रव्यों को चढ़ाने से क्या फल मिलता है, इसका बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है-

सर्वप्रथम जिन भगवान के आगे जलधारा छोड़ने से पापरूपी मैल का क्षालन होता है।

चन्दन के चर्चन से मनुष्य सौभाग्य से सम्पन्न होता है। अक्षतों से पूजा करने वाला मनुष्य कमल के समान सुन्दर मुख वाला, पुष्पों की सुन्दर मालाओं से समर्चित देह वाला कामदेव होता है। नैवेद्य के चढ़ाने से शक्तिमान, कान्ति और तेज से सम्पन्न, अति सुन्दर होता है। दीपों से पूजन करने वाला मनुष्य केवलज्ञानरूपी प्रदीप के तेज से समस्त जीवादि तत्वों के रहस्य को प्रकाशित करने वाला केवली होता है। धूप से पूजा करने वाला मनुष्य त्रैलोक्यव्यापी यश वाला होता है। फलों से पूजा करने वाला परम निर्वाणरूप फल को प्राप्त कर लेता है।

अधिक कहने से क्या? जिन पूजन के फल से संसार के सभी अभ्युदय प्राप्त हो जाते हैं और परम्परा से मुक्ति की भी प्राप्ति हो जाती है अतः प्रत्येक श्रावक को अपने व्यस्ततम समय से कुछ समय भगवान की पूजन के लिए अवश्य निकालना चाहिए।

पुस्तक में प्रकाशित पूजा के माध्यम से आप सभी अपने कर्मों की निर्जरा करें, यही इस पुस्तक की उपयोगिता होगी।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, युगप्रवर्तिका, वात्सल्यमूर्ति
पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद

आचार्यों ने श्रावक के लिए करने योग्य छह प्रमुख कर्तव्य बताए हैं- देवपूजा, गुरुपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान। इनमें से भी दान और पूजा ये दो अतिप्रमुख कर्तव्य बताए हैं। इन कर्तव्यों का नियमित रूप से पालन करने वाला व्यक्ति ही श्रावक कहलाता है। श्रावक शब्द की परिभाषा करते हुये इस प्रकार कहा गया है-

श्र-श्रद्धावान्, व -विवेकवान् और क-क्रियावान् अर्थात् जो पुरुष श्रद्धा और विवेक से सहित होकर इन क्रियाओं का पालन करते हैं वे ''श्रावक'' कहलाते हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि आज के इस भौतिकयुग में भी इन सद्कर्तव्यों का पालन करने वाले श्रावक-श्राविकाएँ विद्यमान हैं। दिल्ली निवासी आनन्द प्रकाश जी भी एक भक्तिवान श्रावक हैं। इन्होंने धर्मपुरा-गांधीनगर (दिल्ली) के मंदिर में भगवान ऋषभदेव, चन्दप्रभ एवं वासुपूज्य इन तीन भगवन्तों की प्रतिमाएँ विराजमान करके महान पुण्य का बंध किया है।

समस्त दि. जैन समाज धर्मपुरा-गांधीनगर-दिल्ली इसी प्रकार हमेशा देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करते हुये अपने इस अतिदुर्लभ मनुष्य पर्याय को सार्थक करे यही मेरा मंगल आशीर्वाद है।

पुस्तक को पढ़ने वाले सभी पाठक गणों के लिए भी मेरा शुभाशीर्वाद है।

-गणिनी ज्ञानमती

मेरी भावना सार्थक हुई

धर्मपुरा-गाँधीनगर (दिल्ली) के मंदिर में समाज द्वारा सम्पन्न हुई मई सन् २००२ की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के समय भगवान ऋषभदेव, चन्द्रप्रभु एवं वासुपूज्य भगवान की तीन मूर्तियाँ विराजमान करने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ जिसे मैं अपना परम सौभाग्य मानता हूँ। भगवान विराजमान करने के बाद मैं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शनार्थ प्रयाग में तपस्थली तीर्थ गया वहाँ संघस्थ आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी से मैंने निवेदन किया कि आप तीनों तीर्थंकरों की सामूहिक पूजा रच दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी। मेरे निवेदन को स्वीकार करके पूज्य माताजी ने बहुत ही अच्छी पूजा लिखकर दी है जो कि उनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का परिचायक है।

इस पुस्तक में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित ''नवदेवता पूजन'' के साथ-साथ समुच्चय चौबीसी पूजा तथा भगवान महावीर की पूजा भी है।

बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज हुए हैं जिनके प्रथम शिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज ने पूज्य ज्ञानमती माताजी को आर्यिका दीक्षा प्रदान की, ऐसे चारित्रचक्रवर्ती गुरु की पूजन भी इस पुस्तक में प्रकाशित है जिसके द्वारा आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी ने जनमानस के हृदय में गुरुओं के प्रति असीम श्रद्धा का स्त्रोत प्रवाहित कर दिया है।

हिन्दी की पूजा प्रारंभ विधि, शान्तिपाठ आदि से सहित यह पुस्तक सभी के लिए उपयोगी सिद्ध हो, यही पुस्तक की सार्थकता होगी।

आनन्द प्रकाश जैन
धर्मपुरा-गाँधीनगर (दिल्ली)

पूजा प्रारम्भ विधि

(हिन्दी पद्यानुवाद-आर्यिका चन्दनामती)

ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।१।।

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं- अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना)

छंद-हे दीनबन्धु.....

अपवित्र या पवित्र हो जिस स्थिति में हो।
वे पंचनमस्कार जपें पाप दूर हो।।
अपवित्र या पवित्र अवस्था भी प्राप्त हो।
परमात्म भजें बाह्य अंतरंग साफ हो।।१।।
सब विघ्न विनाशक अजेय मंत्र प्रभावी।
सब मंगलों में है प्रथम मंगल ही स्वभावी।।
यह पंचनमस्कार सर्वपाप प्रणाशी।
सब मंगलों में है प्रथम मंगल ये प्रभासी।।२।।
परमेष्ठि परमब्रह्म का वाचक है पद अर्हम् ।
सिद्धों के बीज रूप पद को है नमस्कारम् ।।
जो अष्ट कर्म मुक्त मुक्तिरमा मन्दिरम् ।
सम्यक्त्व आदिगुण से सिद्धचक्र सुन्दरम् ।।३।।
विघ्नों का नाश होता है जिनेन्द्र नाम से।
भूतादि का भय भी समाप्त प्रभू गान से।।
विष भी हुआ निर्विष जिनेन्द्र के प्रताप से।
जिनदेव के दर्शन समस्त पाप टारते।।४।।

इति पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवन्तो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।२।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

(यदि अवकाश हो, तो यहाँ पर सहस्रनाम पढ़कर दस अर्घ्य देना चाहिए। नहीं तो आगे लिखा श्लोक पढ़कर अर्घ्य चढ़ाना चाहिए।)

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे।।३।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

स्वस्ति मंगल

शंभु छन्द-

त्रैलोक्यईश स्याद्वाद परम, नायक प्रभु का वंदन करके।
सुअनंतचतुष्टय से संयुत, अर्हत् परमेष्ठी को नम के ।।

श्रीमूलसंघ आम्नायों में, सम्यग्दृष्टी के पुण्य हेतु।
जैनेन्द्र यज्ञ पूजन विधि मैं, कहता हूँ जो संसारसेतु।।१।।
त्रैलोक्यगुरू इन्द्रियविजयी, मुनिपुंगव का मंगल होवे।
स्वाभाविक महिमोदय सुस्थित, जिनवर का भी मंगल होवे।।
जो सहजप्रकाशसमन्वित केवल दर्शनयुत मंगल होवे।
अद्भुत वैभवयुत समवसरण, संयुत जिनका मंगल होवे।।२।।
जो निर्मल केवलज्ञान रूप, अमृत में सदा तैरते हैं।
जो स्वपरभाव के परकाशक, निज में ही तृप्त सु रहते हैं।।
जो तीनलोक में व्याप्त एक, चैतन्य रूप प्रकटाते हैं।
त्रैकालवर्ति तत्त्वज्ञ जिनेश्वर, ही मंगल कर पाते हैं।।३।।
निज भावशुद्धि से परमशुद्धता, पाने का अभिलाषी हूँ।
इसलिए जलादिक द्रव्यों की, शुद्धी का मैं अभ्यासी हूँ।।
ले ओर अनेकों अवलंबन, जिनवर की स्तुति करता हूँ।
भूतार्थ यज्ञ अरिहंत आदि की, पूजा अर्चा करता हूँ।।४।।
हे अर्हन् ! मैं अज्ञानी इन, जल आदि द्रव्य को लाया हूँ।
हे पुरुषपुराण ! द्रव्य का मैं, आलम्बन लेकर आया हूँ।।
हे पुरुषोत्तम ! संपूर्ण पुण्य, एकत्रित करके लाया हूँ।
फिर केवलज्ञान अग्नि में सब, पूर्णाहुति करने आया हूँ।।५।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(यहाँ पर प्रत्येक भगवान् के नाम के पश्चात् पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनंदनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदंत स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनंतः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शांतिः।
श्री कुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्रस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(प्रत्येक श्लोक की समाप्ति के बाद पुष्पांजलि क्षेपण करें)

शंभु छंद

जो नित्य अकंपित अविनाशी, केवलज्ञानी परमात्मा हैं।
दैदीप्यमान मणि किरण मनः, पर्ययज्ञानी शुद्धात्मा हैं।।
निज अवधिज्ञान की दिव्य प्रभा से, जग को शांति प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका, कल्याण करें सुखदाता हैं।।१।।

जो कोष्ठबुद्धि औ एक बीज, ऋद्धी को धारण करते हैं।
संभिन्नश्रोतृ पादानुसारि से, सबकी तृप्ती करते हैं । ।
इन चारों बुद्धि ऋद्धि संयुत, भविजन को सिद्धि प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका, कल्याण करें सुखदाता हैं।।२।।
जो दिव्य मतिज्ञानी इंद्रिय, विषयों से अधिक जानते हैं।
संस्पर्शन श्रवणास्वादन घ्राण, विलोकन ज्ञान धारते हैं।।
पंचेन्द्रिय विषयों के ज्ञानी, जो अतिशय बुद्धि प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका, कल्याण करें सुखदाता हैं।।३।।
जो प्रज्ञाश्रमण महामुनिवर, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धी से युत।
चौदहपूर्वी ज्ञानी प्रवृष्ट, वादी अभिन्नपूरब संयुत।।
अष्टांगमहानिमित्त ज्ञाता, भविजन को सिद्धि प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका, कल्याण करें सुखदाता हैं।।४।।
जो जंघा अग्निशिखा श्रेणी, फल जल आदिक ऋद्धी वाले।
फल पुष्प तन्तु बीजादिक पर, चलकर भी संयम को पाले।।
जो चारणऋद्धि समन्वित हो, निजऋद्धी से जगत्राता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका, कल्याण करें सुखदाता हैं।।५।।
जो अणिमा महिमा ऋद्धि सहित, काया कृश करते रहते हैं।
लघिमा गरिमा में कुशल मुनी, निज आत्मा में ही रमते हैं।।
मनवचनकायबल ऋद्धी के, धारक गुरु शान्ति प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका, कल्याण करें सुखदाता हैं।।६।।

जो कामरूप वश ईश और, प्राकाम्य ऋद्धि के धारी हैं।
अन्तर्धि प्राप्ति से युक्त ऋषी, सारे जग के उपकारी हैं।।
अप्रतीघात गुण में प्रधान, मुनिपुंगव सब सुखदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका, कल्याण करें सुखदाता हैं।।७।।
जो दीप्ति महातप तप करके, उग्रोग्र तपस्या करते हैं।
वे घोर पराक्रम के बल से, मुक्ती कन्या को वरते हैं।।
आत्मार्थी घोर ब्रह्मचारी, सहजात्म स्वरूप प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका, कल्याण करें सुखदाता हैं।।८।।
आमौषधि सवौषधि ऋद्धी, संयुत जो परमेष्ठी होते।
आशीविष दृष्टिविषा को भी, निर्विष कर स्वयं शुद्ध होते।।
विडजल्ल मलौषधि ऋद्धी युत, त्रिभुवन जनसौख्य प्रदाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका, कल्याण करें सुखदाता हैं।।९।।
क्षीरस्त्रावी घृतस्त्रावी मधुस्त्रावी ऋद्धी को भी पाकर।
अमृत का पान करें निज में, अमृतस्त्रावी गुण को लाकर।।
अक्षीणमहानस संवासं, सब ऋद्धि सहित निजज्ञाता हैं।
ऐसे वे ऋषिवर हम सबका, कल्याण करें सुखदाता हैं।।१०।।

इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलिः।

❖❖❖❖❖

नवदेवता पूजा

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

गीता छन्द

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिन आगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृहवंद्य हैं।।
नवदेवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य चैत्यालय समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं.....अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं.....अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूं मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।नव.।।२।।

ॐ ह्रीं.....संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लाय के।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतू, पुंज नवसु चढ़ाय के।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं....।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगंधित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।। नव.।।४।।

ॐ ह्रीं.....कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।नव.।।५।।

ॐ ह्रीं.....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

कर्पूर ज्योती जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।नव.।।६।।

ॐ ह्रीं.....मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।नव.।।७।।

ॐ ह्रीं.....अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्षफल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।नव.।।८।।

ॐ ह्रीं.....मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।। नव.।।९।।

ॐ ह्रीं.....अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

दोहा- **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांती हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

नाना विध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नवदेवता, पुष्पांजलि चढ़ाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्यः-**ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।**

(९, २७ या १०८ बार)

जयमाला

सोरठा- **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।१।।

चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....

जय जय श्री अरिहंत देव देव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।२।।
आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।३।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आतमा की साधना से च्युत न हों कदा।।

ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।४।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।५।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।६।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।७।।

दोहा- नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहां पर कभी न आवते।।९।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री ऋषभदेव, चन्द्रप्रभ एवं वासुपूज्य तीर्थंकरत्रय पूजा

गीता छन्द (स्थापना)

इस कर्मयुग के प्रथम तीर्थंकर प्रभू वृषभेश हैं।
उस श्रृँखला में आठवें श्री चन्द्रप्रभु तीर्थेश हैं।।
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र बारहवें उन्हों की अर्चना।
रत्नत्रयी तीर्थंकरों की मैं करूँ शुभ वन्दना।।१।।

दोहा-आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण महान।
करके पूजन की विधि, प्रारम्भू सुखदान।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्राः ! अत्र अवतरत अवतरत आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्राः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्राः ! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक (शंभु छन्द)

गंगा नदि का पावन जल ले, प्रभु पद में धारा करना है।
निज जन्म जरा मृति नाशन कर, आत्मा के सुख में रमना है।।
श्रीऋषभदेव तीर्थेश चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य को नित ध्याऊँ।
रत्नत्रय प्रभु की पूजा कर, निज में रत्नत्रय प्रगटाऊँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्रेभ्यःजन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर को घिस कर, कर्पूर मिला चर्चन कर लूँ।
संसार ताप के नाश हेतु, जिनवर पद का अर्चन कर लूँ।।
श्रीऋषभदेव तीर्थेश चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य को नित ध्याऊँ।
रत्नत्रय प्रभु की पूजा कर, निज में रत्नत्रय प्रगटाऊँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चावल के पुञ्जों में अक्षत का, भाव संजोकर लाया हूँ।
इससे अक्षयपद प्राप्ती का शुभ, भाव हृदय में लाया हूँ।।
श्री ऋषभदेव तीर्थेश चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य को नित ध्याऊँ।
रत्नत्रय प्रभु की पूजा कर, निज में रत्नत्रय प्रगटाऊँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख की सामग्री पाकर भी, तुमने तो उनको ठुकराया।
इसलिए काम विध्वंस हेतु, तुम पास पुष्प ले मैं आया।।
श्री ऋषभदेव तीर्थेश चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य को नित ध्याऊँ।
रत्नत्रय प्रभु की पूजा कर, निज में रत्नत्रय प्रगटाऊँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्रभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों से आया भोजन भी, तजकर तुमने दीक्षा धारी।
निजक्षुधा नाश हेतू मैं भी, लाया नैवेद्यथाल भारी।।
श्री ऋषभदेव तीर्थेश चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य को नित ध्याऊँ।
रत्नत्रय प्रभु की पूजा कर, निज में रत्नत्रय प्रगटाऊँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्रभ्यः क्षुधारोगविनाशनायनैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ बाह्य निमित्तों को पाकर, तुम निर्मोही बन गये प्रभो।
निजमोह घटाने हेतु दीप, लाया हूँ आरति करने को।।
श्री ऋषभदेव तीर्थेश चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य को नित ध्याऊँ।
रत्नत्रय प्रभु की पूजा कर, निज में रत्नत्रय प्रगटाऊँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्रभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों को नष्ट किया तुमने, भगवान तभी बन पाये हो।
अपने कर्मों के नाश हेतू, मैं भी आया हूँ धूप जलाने को।।
श्री ऋषभदेव तीर्थेश चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य को नित ध्याऊँ।
रत्नत्रय प्रभु की पूजा कर, निज में रत्नत्रय प्रगटाऊँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्रभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पुण्यकर्म के फलस्वरूप, अरिहंत परमपद पाया है।
उत्तमफल की प्राप्ती हेतू, मैंने फल थाल चढ़ाया है।।
श्री ऋषभदेव तीर्थेश चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य को नित ध्याऊँ।
रत्नत्रय प्रभु की पूजा कर, निज में रत्नत्रय प्रगटाऊँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्रभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों को नष्ट किया, अष्टमवसुधा पर पहुंच गये।
मैं भी अनर्घ्य पद प्राप्ति हेतु, नत हूँ चरणों में अर्घ्य लिये।।
श्री ऋषभदेव तीर्थेश चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य को नित ध्याऊँ।

रत्नत्रय प्रभु की पूजा कर, निज में रत्नत्रय प्रगटाऊँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्रभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–

गंगा यमुना सरस्वति, त्रय नदि का जल लाय।
तीर्थंकर त्रय के चरण, धार करूँ समुदाय।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

लाल श्वेत नीले कमल, पुष्प सुंगधित सार।
तुम पद पुष्पांजलि करूँ, भरूँ सौख्य भण्डार।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

तीर्थंकर त्रय के अर्घ्य

श्रीनाभिराय मरुदेवी के सुत, तीर्थंकर वृषभेश्वर हैं।
कृतयुग के स्त्रष्टा नगरि अयोध्या, में जन्मे जगदीश्वर हैं।।
दीक्षा प्रयाग में ले वटवृक्ष तले कैवल्य ज्ञान पाया।
अष्टापद से शिव प्राप्त प्रभू को, अर्घ्य चढ़ाने मैं आया।।१।।

ॐ ह्रीं गर्भजन्मतपज्ञानमोक्षपंचकल्याणक समन्वित श्रीऋषभदेव जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभचन्द्रपुरी नगरी में नृप, महासेन पिता के महलों में।
लक्ष्मणा मात ने स्वप्न देख, तीर्थंकर चन्द्रप्रभ जन्मे।।
सर्वर्तुवनी में दीक्षा ले, कैवल्यज्ञान को प्राप्त किया।
सम्मेदशिखर से मोक्ष गये, प्रभुवर को अर्घ्य चढ़ाय दिया।।२।।

ॐ ह्रीं गर्भजन्मतपज्ञानमोक्षपंचकल्याणकसमन्वितश्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वसुपूज्य पिता माँ जयावती से, चम्पापुरि में जन्म लिया।
दीक्षा व ज्ञान निर्वाण प्राप्त कर उसी धरा का धन्य किया।।
उन बारहवें तीर्थंकर प्रभु, श्री वासुपूज्य को यजन करूँ।
चरणों में अर्घ्य समर्प्य ''चन्दनामती'' प्रभू को नमन करूँ।।३।।

ॐ ह्रीं गर्भजन्मतपज्ञानमोक्षपंचकल्याणकसमन्वितश्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जय जय तीर्थंकर ऋषभदेव, तुम धर्मतीर्थ के कर्ता हो।
जय जय कृतयुग के आदिदेव, तुम प्रजापती दुखहर्ता हो।।
असि मसि कृषि आदि क्रियाओं का, तुमने पहले उपदेश दिया।
फिर राजनीति बतलाकर सब, राजाओं को सन्देश दिया।।१।।
तुम न्यायनीति से राज्य करो, जनता को पुत्र सदृश समझो।
लो समय-समय पर टैक्स प्रजा से, किन्तु न उसको दुखी करो।।
प्रभु इक दिन नीलांजना नृत्य, देखा विराग को प्राप्त हुए।
सब राज्यपाट को त्याग दिया, फिर त्रिभुवन के सम्राट हुए।।२।।
वृषभेश्वर की गौरव गाथा, वर्णित है ग्रंथ पुराणों में।
आगे के तेइस तीर्थंकर, हुए और उन्हीं की श्रेणी में।।
हे नाभिललन मरुदेवी के, नन्दन तुझको शत-शत वन्दन।
तुम चरणों में मेरा श्रद्धा, भक्ती से अर्घ्य थाल अर्पण।।३।।
जय चन्द्र किरण सम श्वेत नाथ, चन्द्रप्रभ तीर्थंकर जग में।
पहले धरती के राजा फिर, मुनिराजा बन सरताज बने।।

मुझको अपनी शीतल किरणों से, भगवन्! शांति प्रदान करो।
हे चन्द जिनेश्वर! तुम मेरा यह, अर्घ्य थाल स्वीकार करो।।४।।
जय जय श्री वासुपूज्य जिनवर, तुम बालयती तीर्थंकर हो।
चम्पापुर के युवराज प्रभो!, त्रिभुवनपति सर्वहितंकर हो।।
रोहिणिव्रत में श्रद्धालू भक्त, अर्चना तुम्हारी करते हैं।
व्रत फल स्वरूप इस भव परभव में, इच्छित फल को वरते हैं।।५।।
हे ऋषभदेव ! हे चन्द्रनाथ !, हे वासुपूज्य प्रभु ! तुम्हें नमन।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु, तुम चरणों में शत शत वन्दन।।
इक अर्घ्य थाल के माध्यम से, मैं फल अनर्घ्यपद चाह रहा।
''चन्दनामती'' भक्तीवश मैं, बस जिनवर का पद मांग रहा।।६।।

दोहा-

तीर्थंकर के पद कमल, की पूजा सुखकार।
जनम जनम मिलती रहे, विनय यही शतबार।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवचन्द्रप्रभवासुपूज्यजिनेन्द्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-

जिनप्रतिमा निर्माण का, पुण्य बने अक्षीण।
जिन प्रतिमा के ध्यान में, हो मेरा मन लीन।।

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः

❖❖❖❖❖

समुच्चय चौबीसी जिनपूजा

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, समुति पदम सुपार्श्व जिनराय।
चंद्र पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजित सुरराय।।
विमल अनंत धरम जस उज्जवल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

मुनिमन सम उज्जवल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा।।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।
पद जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी।
जिन चरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी।। चौ.२।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।

तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे।
मुक्ताफल की उनमान, पुञ्ज धरौं प्यारे।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्द कन्द सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे।
जिन अग्र धरों गुणमंड, काम-कलंक हरे।। चौ. ४।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

मनमोहक मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रस पूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने।। चौ.५।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागे।। चौ.६।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों।
मिस धूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हों।। चौ. ७।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुचिपक्वसरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।
देखत दृग मन को प्यार, पूजत सुख पायो।। चौ.८।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।। चौ. ९।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

दोहा

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हितहेत।
गाऊँ गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत।।१।।

छन्द-घत्तानन्द

जय भवतम भंजन, जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छकरा।
शिव मग परकाशक, अरिगण नाशक, चौबीसों जिनराज वरा।। २।।

छन्द पद्धरी

जय ऋषभदेव ऋषिगण नमंत, जय अजित जीत वसु अरि तुरंत।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनन्दपूर।।३।।
जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्म पद्मदुति तनरसाल।
जय जय सुपार्श्व भवपास नाश, जय चंद चंदतनदुति प्रकाश।।४।।
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतलगुणनिकेत।
जय श्रेयनाथ नुतसहसभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपुज्ज।। ५।।
जय विमल विमलपद देनदार, जय जय अनन्त गुणगण अपार।
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत, जय शान्ति शान्ति पुष्टी करेत।। ६।।

जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय, जय अर जिन वसु अरि छय करेय।
जय मल्लि मल्लहतमोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्लदल्ल।।७।।
जय नमिनितवासवनुत सपेम, जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम।
जय पारसनाथ अनाथनाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ।।८।।

छन्द-घत्तानन्द

चौबीस जिनंदा, आनंदकंदा, पापनिकन्दा सुखकारी।
तिन पद जुगचन्दा, उदय अमन्दा, वासव-वन्दा हितधारी।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोरठा

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै।।१०।।

।। इत्याशीर्वादः।।

❖❖❖❖❖

श्री महावीर जिनपूजा

अथ स्थापना-मत्तगयंद छन्द

श्रीमत वीर हरें भवपीर, भरें सुखसीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरि पंकति मौलि सुआई।।
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु, भक्तिसमेत हिये हरषाई।
हे करुणा-धन-धारक देव, इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

(चाल-द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टकादिक अनेक रागों में बनती है)

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातें धार करों।।
श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।। १।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दनसार, केसर संग घसों।
प्रभु भवआताप निवार, पूजत हिय हुलसों।।श्री वीर.।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरो अविरुद्ध, पावों शिवनगरी।।

श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।३।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथभंजन हेत, पूजों पद थारे।।श्रीवीर.।।४।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी।। श्री वीर.।।५।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तमखंडित मंडित नेह, दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों।। श्रीवीर.।।६।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगंध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा।।श्री वीर।।७।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रितुफल कल-वर्जित लाय, कंचन थार भरों।
शिव फलहित हे जिनराय, तुम ढिग भेंट धरों।।श्रीवीर.।।८।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।।श्रीवीर.।।९।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक-राग टप्पा

मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमानजिनरायजी, मोहि राखो.।।
गरभ साढ़सित छट्ट लियो तिथि, त्रिसला उर अघ हरना।
सुर सुरपति तित सेव कर्यो नित, मैं पूजों भवतरना।।मोहि.।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कनवरना।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना।। मोहि.।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना।। मोहि.।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकलदशैं वैशाख दिवस अरि, द्याति चतुक क्षय करना।
केवल लहि भवि भवसर तारे, जजों चरण सुख भरना। मोहि.।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुर तें वरना।
गणफनिवृन्द जजें तित बहुविध, मैं पूजों भय हरना।। मोहि.।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छन्द हरिगीता, २८ मात्रा)

गणधर अशनिधर, चक्रधर हलधर, गदाधर वरवदा।
अरु चापधर, विद्यासुधर, तिरशूलधर सेवहिं सदा।
दुःखहरन आनन्दभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं।
सुकुमाल गुण मणिमाल उन्नत, भालकी जयमाला है।।१।।

छन्द घत्तानन्द

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन चंदवरं।
भवतापनिकंदन, तनकनमंदन, रहित सपंदन नयन धरं।।२।।

छन्द त्रोटक

जय केवलभानु-कला-सदनं। भवि-कोक-विकाशन कंदवनं।
जगजीत महारिपु मोहहरं। रजज्ञान-दृगांवर चूर करं।।१।।
गर्भादिक-मंगलमंडित हो। दुःखदारिदको नित खंडित हो।
जगमांहि तुम्हीं सतपंडित हो। तुमही भवभाव-विहंडित हो।।२।।
हरिवंश सरोजन को रवि हो। बलवंत महंत तुम्हीं कवि हो।
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो। अबलों सोइमारग राजति यो।।३।।
पुनि आप तने गुण मांहि सही। सुरमग्न रहैं जितने सबहीं।
तिनकी वनिता गुनगावत हैं। लय माननिसों मनभावत हैं।।४।।
पुनि नाचत रंग उमंग-भरी। तुम भक्ति विषैं पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं। सुर लेत तहाँ तननं तननं।।५।।
घननं घननं घनघंट बजै। दृमदं दृमदं मिरदंग सजै।
गगनांगन-गर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता।।६।।
धृगतां धृगतां गति बाजत है। सुरताल रसालजु छाजत है।

सननं सननं सननं नभमें। इकरूप अनेक जु धारि भ्रमें।।७।।
कई नारि सुबीन बजावत हैं। तुमरो जस उज्जवल गावत हैं।
करताल विषैं करताल धरैं। सुरताल विशाल जु नाद करैं।।८।।
इन आदि अनेक उछाह भरी। सुरभक्ति करें प्रभुजी तुमरी।
तुमही जग जीवन के पितु हो। तुमही बिनकारक के हितु हो।।९।।
तुम ही सब विघ्न विनाशन हो। तुमही निज आनंदभासन हो।
तुमही चितचिंतितदायक हो। जगमांहि तुम्हीं सबलायक हो।।१०।।
तुमरे पन मंगल मांहि सही। जिय उत्तम पुण्य लियो सबही।
हमको तुमरी शरणागत है। तुमरे गुण में मन पागत है।।११।।
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये। जबलों वसु कर्म नहीं नसिये।
तबलों तुम ध्यान हिये वरतो। तबलों श्रुतचिंतन चित्त रतो।।१२।।
तबलों व्रत चारित चाहतु हों। तबलों शुभभाव सुगाहतु हों।
तबलों सतसंगति चित्त रहो। तबलों मम संजम चित्त गहो।।१३।।
जबलों नहिं नाश करों अरि को। शिव नारि वरो समता धरिको।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी। हम जाचतु हैं इतनी सुनजी।।१४।।

घत्ता

श्रीवीरजिनेशा, नमित सुरेशा, नाग नरेशा भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावै, विघन नशावै, वांछित पावै शर्म वरा।।१५।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री सन्मति के जुगल पद, जो पूजैं धर प्रीत।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत।।

इत्याशीर्वादः

❖❖❖❖❖

श्री शान्तिसागर महाराज की पूजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

स्थापना

पूजन करो रे,
श्रीशान्तिसिन्धु आचार्य प्रवर की, पूजन करो रे-२।
भारतवसुन्धरा ने जब, मुनियों के दर्श नहिं पाये।
सदी बीसवीं में तब श्री, चारित्रचक्रवर्ती आए।।
दक्षिण भारत भोजग्राम ने, एक लाल को जन्म दिया।
उसने ही सबसे पहले, मुनिपरम्परा जीवन्त किया।।
मुनिपरम्परा जीवन्त किया।।

पूजन करो रे,
श्रीशान्तिसिन्धु आचार्य प्रवर की, पूजन करो रे-।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीश्रीशान्तिसागरआचार्यवर्य ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीश्रीशान्तिसागरआचार्यवर्य ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीश्रीशान्तिसागरआचार्यवर्य ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

(तर्ज- तीरथ करने चली सती.....)

दीक्षा लेकर बने मुनि, निज कर्मकलंक जलाने को।
कैसे होते हैं मुनिवर, यह बतला दिया जमाने को।।बतला....
सागर सम गंभीरतथा, गंगा जल सम शीतल वाणी।
जीवन में साकार किया, प्रभु कुंदकुंद की जिनवाणी।।
ऐसे गुरु के पद में आए, हम जलधार चढ़ाने को,
हम जलधार चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

चन्दन का शीतलता गुण, तुम आगे मानो व्यर्थ हुआ।
विषधर का विष भी तुम पर, चढ़ भक्ति भाव कर उतर गया।।
हम भी निज शीतलता हेतू, लाए गंध चढ़ाने को।
लाए गंध चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।

विषयवासना के बंधन, जग को निज वश में करते हैं।
तुम जैसे मुनिगण तप करके, मोक्षमार्ग को वरते हैं।
शुभ्र धवल अक्षत ले आए, तुम पद पुंज चढ़ाने को।
तुम पद पुंज चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं....।

बालविवाह हुआ फिर भी, ब्रह्मचारी जीवन बीता था।
सत्यवती माँ ने अपनी, ममता से तुमको सींचा था।।

कामदेव वश करने हेतू, आए पुष्प चढ़ाने को,
आए पुष्प चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

पैंतिस वर्षों तक दीक्षित, जीवन में घोर तपस्या की।
साढ़े पच्चिस वर्ष तुम्हारे, उपवासों की संख्या थी।।
मिले हमें भी तपशक्ती, आए नैवेद्य चढ़ाने को।
आए नैवद्य चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवद्यं...।

दक्षिण से उत्तर में आकर, ज्ञान का दीप जलाया था।
नग्न दिगम्बर वेष मुनी का, सब जग को दिखलाया था।।
घृत दीपक ले हम भी आए, मोह अन्धेर नशाने को।
मोह अन्धेर नशाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं..।

कर्मों को कृश करने वाले, वीर पुरुष कहलाते हैं।
तुम जैसा सुसमाधिमरण, बिरले साधू कर पाते हैं।
धूप जलाकर चाह रहे हम, कर्म समूह जलाने को।
कर्म समूह जलाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसगराय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

उत्तम फल की चाह में तुमने, नग्न दिगम्बर व्रत धारा।
जिनवर के लघु नन्दन बनकर, मोक्षमार्ग को साकारा।।
फल का थाल चढ़ाने आए, तुम जैसा फल पाने को।
तुम जैसा फल पाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय मोक्षफलप्राप्तये फलं....।

साधु अवस्था धारण कर, क्रम क्रम से श्रेणी बढ़ती है।
कर्म निर्जरा के बल पर, अरिहन्त अवस्था मिलती है।।
गुरु चरणों में इसीलिए हम, आए अर्घ्य चढ़ाने को।
आए अर्घ्य चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

शेर छन्द

सागर जहाँ गंभीरता में सुप्रसिद्ध है।
गुरु शान्तिसिन्धु के समक्ष वह भी तुच्छ है।।
जहाँ शांति का जल सर्वदा कल्लोल करे है।
उन गुरु चरण में हम भी शांतिधार करे हैं।।१।।
शान्तये शान्तिधारा।

स्याद्वाद के पुष्पों से तव उद्यान खिल रहा।
तुमसे ही आज मुनिवरों का दर्श मिल रहा।।
उपकार तुम्हारा न धरा भूल सकेगी।
खुद पुष्प अंजली से पुष्प वृष्टि करेगी।।२।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

तर्ज–बाबुल की......

गुरु शान्तिसिन्धु की पूजन से, आतम सुख का भण्डार मिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।। टेक.।।
आषाढ़ असित षष्ठी इसवी सन्, अट्ठारह सौ बहत्तर में।
पितु भीमगौंड़ माँ सत्यवती से, जन्म लिया इक बालक ने।।
शुभ नाम सातगौंडा पाया, तब भोज ग्राम के भाग्य खिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।१।।
ईस्वी सन् उन्निस सौ तेरह, शुक्ला तेरस शुभ ज्येष्ठ तिथी।
देवेन्द्रकीर्ति मुनिवर से ''उत्तूर'', में क्षुल्लक व्रत दीक्षा ली।।
निज पर कल्याण भावना ले, गुरु शांतिसिन्धु शिवद्वार चले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।२।।
सन् उन्निस सौ बीस में फिर, देवेन्द्रकीर्ति मुनिवर से ही।
यरनाल पंचकल्याणक में, श्रीशान्तिसिन्ध मुनि बने वहीं।।
उस फाल्गुन शुक्ला चौदश को, उनके अन्तर्मन द्वार खुले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।३।।
अट्ठाइस मूलगुणों में रत, मुनिवर की ख्याती फैल रही।
आचार्य बने वे सर्वप्रथम, समडोली धरा पवित्र हुई।।
गुरुओं के गुरु वे बने स्वयं, निज में जब मूलाचार पले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।४।।
तव कृपा प्रसाद से ताम्रपट्ट पर, धवल ग्रन्थ उत्कीर्ण हुआ।

तव चरणों में नास्तिक जीवों का, अहंकार निर्जीर्ण हुआ।।
मुनि श्रावक के व्रत ले लेकर, तुम वृक्ष में पुष्प हजार खिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।५।।
सन् पचपन कुंथलगिरि पर द्वादश,वर्ष सल्लेखना पूर्ण लिया।
भादों सुदि दुतिया को नश्वर, काया को तुमने त्याग दिया।।
लाखों जनता के नेत्रों से, तब अश्रूधार अपार चले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।६।।
युगपुरुष! तेरे उपकारों का, बदला न चुकाया जा सकता।
तेरी श्रेणी में और किसी, साधू का त्याग न आ सकता।।
तू तो तुझमें ही समा गया, बस आज तेरी जयकार मिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।७।।
चारित्रचक्रवर्ती गुरु की, जयमाल गूंथ कर लाए हैं।
बीसवीं सदी के प्रथम सूरि, के चरण चढ़ाने आए हैं।
''चन्दनामती'' मुझको भी तुम सम, गुण के कुछ संस्कार मिलें।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलि।

शांतिसिन्धु आचार्य की, पूजन यह सुखकार।
जो करते श्रद्धा सहित, होते भव से पार।।

इत्याशीर्वादः

❖❖❖❖❖

शान्तिपाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजैं।।१।।
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।२।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।३।।
शांतिजिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।४।।
पूजें जिन्हें मुकुट-हार किरीट लाके,
इन्द्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहु शांति सदा अनूप।।५।।
संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांति को दे।।६।।
होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पे, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।।
होवे चोरी न मारी, सुसमय बरतै हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।७।।

दोहा

घाति कर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज,
शांति करें ते जगत में, वृषभादिक जिनराज।।८।।
शास्त्रों को हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।।९।।
बोलूँ प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौलौं न पाऊँ ।।१०।।

आर्य्या छन्द

तव पद मेरे हिय में मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहौ प्रभु जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।११।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुख से।।१२।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर पाऊँ तव शरण चरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।१३।।

(तीन बार शांतिधारा देवें तथा नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन पाठ

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तें परमगुरु, सो सब पूरन होय।।१।।
पूजनविधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करो भगवान।।२।।
मंत्र-हीन धन-हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।३।।
आये जो-जो देवगण, पूजें भक्ति प्रमाण।
सो अब जावहु कृपा कर, अपने-अपने थान।।४।।

ऋषभदेव भगवान की आरती

तर्ज- क्या खूब दिखती हो.....

प्रभु आरति करने से, सब आरत टलते हैं।
जनम-जनम के पाप सभी, इक क्षण में टलते हैं।
मन-मंदिर में ज्ञान ज्योति के, दीपक जलते हैं।। प्रभु.।।
श्री ऋषभदेव जब जन्मे-हां-हां जन्मे,
कुछ क्षण को भी शांति हुई नरकों में।।
स्वर्गों से इन्द्र भी आए..... हां.हां आए।
प्रभु जन्मोत्सव में खुशियां खूब मनाएं।।
ऐसे प्रभु की आरति से, सब आरत टलते हैं। मन मंदिर में .....।।प्रभु.।।१।।
धन-धन्य अयोध्या नगरी.....हां.....हां नगरी।
पन्द्रह महीने जहां हुई रतन की वृष्टी।
हुई धन्य मात मरूदेवी.....हां.....हां....देवी।
जिनकी सेवा करने आईं सुरदेवी।।
उन जिनवर के दर्शन से सब पातक टलते हैं। मन मंदिर में.....।।प्रभु.।।२।।
सुख भोगे बनकर राजा.....हां.....हां राजा
वैराग्य हुआ तो राजपाट सब त्यागा।
मांगी तब पितु से आज्ञा.....हां-हां आज्ञा।
निज पुत्र भरत को बना अवध का राजा।।
वृषभेश्वर जिन के दर्शन से, सब सुख मिलते हैं।। मन मंदिर में.....।।प्रभु.।।३।।
इक नहीं अनेकों राजा.....हां-हां राजा।
'चन्दनामती' प्रभु संग बने महाराजा।
प्रभु हस्तिनागपुर पहुंचे.....हां-हां पहुंचे।
आहार प्रथम हुआ था श्रेयांस महल में।
पंचाश्चर्य रतन उनके महलों में बरसते हैं।। मन मंदिर में.....।।प्रभु.।।४।।
तपकर कैवल्य को पाया.....हां-हां पाया,
तब धनपति ने समवसरण रचवाया।
फिर शिवलक्ष्मी को पाया.....हां-हां पाया,
कैलाशगिरी पर ऐसा ध्यान लगाया।।
दीप जला आरति करने से आरत टलते हैं। मन मंदिर में.....।।प्रभु.।।५।।

आरती श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर की

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-आरति करूँ चौबीस जिनेश्वर.....

आरति करूँ श्री चन्द्रप्रभु की, आरति करूँ प्रभु जी।।टेक.।।
पहली आरति गर्भकल्याणक-२,
पन्द्रह मास रतनवृष्टी की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।१।।
दूजी आरति जन्मोत्सव की-२,
मेरू सुदर्शन पर अभिषव की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।२।।
तीजी है निष्क्रमण दिवस की-२,
लौकांतिक सुर अनुमोदन की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।३।।
चौथी आरति केवलि प्रभु की-२,
द्वादशगण युत समवसरण की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।४।।
पंचम आरति पंचम गति की-२,
मोक्ष धाम संयुत जिनवर की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।५।।
पंचकल्याणकपति प्रभु तुम हो-२,
नाश किया संसार भ्रमण को, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।६।।
आरति से भव आरत छुटता-२,
करें''चन्दना''वन्दन प्रभु का, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।७।।

❖❖❖❖❖

श्री वासुपूज्य भगवान की आरती

-रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

ॐ जय वासुपूज्य स्वामी, प्रभु जय वासुपूज्य स्वामी।
पंचकल्याणक अधिपति-२, तुम अन्तर्यामी ।। ॐ जय.।।

चम्पापुर नगरी भी, धन्य हुई तुमसे। स्वामी धन्य.....
जयरामा वसुपूज्य तुम्हारे, मात पिता हरषे।।ॐ जय.।।१।।

बालब्रह्मचारी बन, महाव्रत को धारा। स्वामी महाव्रत.....
प्रथम बालयति जग ने, तुमको स्वीकारा ।।ॐ जय.।।२।।

गर्भ जन्म तप एवं, केवलज्ञान लिया। स्वामी.....
चम्पापुर में ही तुमने, पद निर्वाण लिया।।ॐ जय.।।३।।

वासव गण से पूजित, वासुपूज्य जिनवर। स्वामी.....
बारहवें तीर्थंकर, है तुम नाम अमर।।ॐ जय.।।४।।

जो कोई तुमको सुमिरे, सुख सम्पति पावे। स्वामी.....
पूजन वन्दन करके, वन्दित हो जावे।। ॐ जय.।।५।।

घृत आरति ले हम सब, तुम आरति करते। स्वामी.....
उसका फल यह मिले चन्दनामती शुद्ध कर दे।। ॐ जय.।।६।।

❖❖❖❖❖

श्री ऋषभदेव, चन्द्रप्रभु, वासुपूज्य भगवान की आरती

रचयित्री-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

तर्ज- झुमका गिरा रे.....

आरति करो रे,
श्री ऋषभ चन्द्रप्रभु वासुपूज्य की आरति करो रे।।टेक.।।
नगरि अयोध्या ऋषभदेव की, जन्मभूमि कहलाती है।
कोड़ा कोड़ी वर्ष बाद भी, जग में जानी जाती है।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
श्री नाभिराय-मरुदेवी सुत की, आरति करो रे।।१।।
धवल चन्द्र सम चन्द्रप्रभू ने, चन्द्रपुरी में जन्म लिया।
इन अष्टम तीर्थंकर ने, अष्टम वसुधा को प्राप्त किया।।
आरती करो, आरति करो, अरती करो रे,
पितु महासेन के प्रिय नन्दन की, आरति करो रे।।२।।
चम्पापुर में वासुपूज्य, जिनवर के पंचकल्याण हुए।
बालब्रह्मचारी प्रभुवर की, आरति से सब कर्म हने।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
जाँ जयावती के अनुपम सुत की, आरति करो रे।।३।।
इन जिनवर की आरति ही, मिथ्यात्वतिमिर को हरती है।
भव भव का अज्ञान दूर कर, शाश्वत सुख को भरती है।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
''सारिका'' सभी मिल भक्ती से, आरति करो रे।।४।।

❖❖❖❖❖

आरती महावीर स्वामी की

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जयवीर प्रभो, महावीर प्रभो, की मंगल दीप प्रजाल के
मैं आज उतारूं आरतिया।। टेक.।।
सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने, बहुत रत्न बरसाये।।प्रभू जी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हर्षी, तेरे गर्भागम कल्याण पे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।१।।
धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहां प्रभु लीना।
चैत सुदी तेरस के दिन, वहां इन्द्र महोत्सव कीना।।प्रभू जी.।।
काश्यप कुल के, भूषण तुम थे, बस एक मात्र अवतार थे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।२।।
यौवन में दीक्षा धारणकर, राजपाट सब त्यागा।
मगसिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा।।प्रभू जी.।।
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिये मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।३।।
शुक्ल दशमि बैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था। प्रभू. जी.।।
तब दिव्यध्वनी, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूं आरतिया।।४।।
पावापुरि, सरवर में आकर, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था।। प्रभू.जी.।।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूं आरतिया।।५।।
वर्धमान सन्मति अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहे 'चन्दनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योति भर दो।। प्रभू. जी।।
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूं आरतिया।।६।।

आरती श्री महावीर स्वामी की

¬ t; egkohj iHkk] Lokeh t; egkohj iHkkA
d.Myij vorkjh] f='kyukUn foHkkAA ¬ t; egkohj iHkkAA
fl)kjFk ?kj tUe] oHko Fkk Hkkjh] Lokeh oHko Fkk HkkjhA
cky cãpkjh or] ikY;k ri/kkjhAA 1AA ¬ t; egkohj iHkkA
vkre Kku fojkxh] le nf"V /kkjhA
ek;k ekg fouk'kd] Kku T;kfr tkjhAA 2AA ¬ t; egkohj iHkkA
tx e ikB vfgalk] vkifg foLr;kA
fgalk iki feVkdj] l/ke ifjpk;kAA 3AA ¬ t; egkohj iHkkA
bg fof/k pknuij e] vfr'k; nj'kk;kA
Xoky eukjFk ij;k] n/k xk; ik;kAA 4AA ¬ t; egkohj iHkkA
ik.knku e=h dk] reu iHk nhukA
efUnj rhu f'k[kj dk] fufer g dhukAA 5AA ¬ t; egkohj iHkkA
t;ij ui Hkh rj] vfr'k; d lohA
,d xke fru nhuk] lok fgr ;g HkhAA 6AA ¬ t; egkohj iHkkA
tk dkb rj nj ij] bPNk dj vkoA
gk; eukjFk ij.k] ldV feV tkoAA 7AA ¬ t; egkohj iHkkA
fuf'k fnu iHk efnj e] txex T;kfr tjA
^gfj ilkn* pj.kk e] vkuUn ekn HkjAA 8AA ¬ t; egkohj iHkkA

❖❖❖

चौबीस भगवान की आरती

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

मैं तो आरती उतारूं रे चौबीसों जिनवर की।
जय जय चौबीसों जिनवर, जय जय जय ।।टेक.।।
पहली आरती करूं कैलाश, गिरिवर अनुपम की।।गिरिवर अनुपम की।।
मुक्ति पाये जहां वृषभेश, नाभि के नन्दन की।।नाभि के नन्दन की।।
तीर्थ करतार कहे, युग के आधार रहे, महिमा है अपरम्पार।
हो हो जिनकी महिमा है अपरम्पार है ।। मैं तो.....।।
दूजी आरती करूं सिद्ध क्षेत्र,चम्पापुरिवर की।। चम्पापुरिवर की।।
वासुपूज्य जिनेश्वर ध्याय, वसुपूज्य नंदन की।। वसुपूज्य नन्दन की।।
भक्ति करो झूम-झूम, नृत्य करो, घूम-घूम, जीवन सुधारो रे,
हो प्यारा-प्यारा जीवन सुधारो रे ।। मैं तो.....।।
तीजी आरती महागिरिराज, गिरिनार पर्वत की।।गिरिनार पर्वत की।।
राजुल त्याग चले नेमिनाथ, सिद्धि को वरने को।।सिद्धि को वरने को।।
दीक्षा ले साधु बने, मुक्ति के कांत बने, सिद्धि लोक विराजे जा,
हो हो सिद्ध लोक विराजे जो ।। मैं तो.....।।
चौथी आरती करूं निर्वाण पावापुरिवर की।।पावापुरिवर की।
त्रिशलानन्दन है वीर महावीर, मुक्ति के स्थल की।।मुक्ति के स्थल की।
कुण्डलपुर जन्म हुआ, कण-कण पवित्र हुआ, सिद्धार्थ के दरबार।
हो हो राजा सिद्धार्थ के दरबार ।। मैं तो.....।।
पंचम आरती करूं उस तीर्थ, अद्भुत अनुपम की।।अद्भुत अनुपम की।।
सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र, बीस जिनेश्वर की।। बीस जिनेश्वर की।।
'चन्दना' गुणगान करे, मन में यह आश धरे, भक्ति करूं दिन रात।
हो हो प्रभु भक्ति करूं दिन रात ।। मैं तो.....।।

आरती श्री शांतिसागर महाराज की

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

धुन-नागिन.....

जय जय गुरुवर, हे सूरीश्वर, श्री शान्तिसिन्धु महाराज की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।
जग में महापुरुष युग का, परिवर्तन करने आते।
अपनी त्याग तपस्या से वे, नवजीवन भर जाते।।
गुरु जी नवजीवन.....
जग धन्य हुआ, तव जन्म हुआ, मुनि परम्परा साकार की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।१।।
कलियुग में साक्षात् मोक्ष की, परम्परा नहिं मानी।
फिर भी शिव का मार्ग खुला है, जिस पर चलते ज्ञानी।।
गुरु जी जिस पर.....
मुनि पद पाया, पथ दिखलाया, चर्या पाली जिननाथ की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।२।।
मुनि देवेन्द्रकीर्ति गुरुवर से, दीक्षा तुमने पाई।
भोज ग्राम माँ सत्यवती की, कीर्तिप्रभा फैलाई।।
गुरु जी कीर्तिप्रभा.....
हे शान्तिसिन्धु, हे विश्ववन्द्य, तेरी महिमा अपरम्पार थी
मैं आज उतारूँ आरतिया।।३।।
परमेष्ठी आचार्य प्रथम तुम, इस युग के कहलाए।
सदियों सोई मानवता को, आप जगाने आए।।
गुरु जी आप.....
तपमूर्ति बने, कटुकर्म हने, उत्तम समाधि भी प्राप्त की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।४।।
श्री चारित्रचक्रवर्ती के, चरणों में वन्दन है।
अहिविष भी ''चन्दनामती'', तव पास बना चन्दन है।।गुरु जी.....
भव पार करो, कल्याण करो, मिल जावे बोधि समाधि भी,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।५।।